53वीं वार्षिक रिपोर्ट
53rd ANNUAL REPORT
2009 - 2010

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
LIFE INSURANCE CORPORATION OF INDIA

MEMBERS OF THE CORPORATION

श्री टी. एस. विजयन, अध्यक्ष
Shri T. S. Vijayan, Chairman

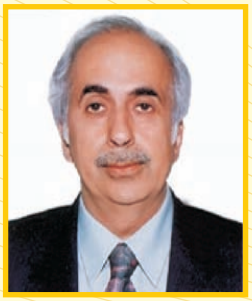

श्री अशोक चावला
Shri Ashok Chawla

श्री आर. गोपालन
Shri R. Gopalan

श्री डी. के. मेहेरोत्रा
Shri D. K. Mehrotra

श्री थॉमस मैथ्यू टी.
Shri Thomas Mathew T.

श्री ए. के. दासगुप्ता
Shri A. K. Dasgupta

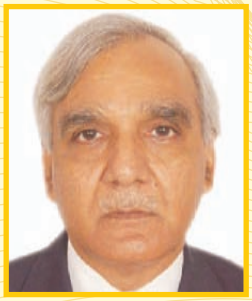

श्री योगेश लोहिया
Shri Yogesh Lohiya

श्री एस. श्रीधर
Shri S. Sridhar

डॉ सूरानाड राजसेखरन
Dr. Sooranad Rajashekhran

श्री मोनीस आर. किदवई
Shri Monis R. Kidwai

लेफ्ट. जन. (रि.) ए. महाजन
Lt. Gen. (Retd.) A. Mahajan

श्री अनुप प्रकाश गर्ग
Shri Anup Prakash Garg

श्री संजय जैन
Shri Sanjay Jain

53वीं वार्षिक रिपोर्ट

53rd Annual Report

2009-2010

विषय सूची

		पृष्ठ
1.	आमुख	5
2.	निगम एवं समितियों के सदस्य, निगम के वरिष्ठ प्रशासक, मुख्य बीमांकक एवं क्षेत्रीय सलाहकार बोर्ड एवं बीमाधारक परिषद के सदस्य	5
3.	आर्थिक परिवेश	5
4.	जीवन बीमा व्यवसाय पर समष्टि आर्थिक परिवेश का प्रभाव	7
5.	कार्य परिणाम :	8
	I) **नव व्यवसाय** : व्यक्तिगत बीमा, सामान्य वार्षिकी, पेंशन, यूनिट लिंक व्यवसाय, समूह बीमा व्यवसाय, सामाजिक सुरक्षा योजनाएं, प्रथम बीमा, ग्रामीण बीमा,	
	II) **विभिन्न क्षेत्रों में चालू व्यवसाय** : व्यक्तिगत बीमा, सामान्य वार्षिकी, पेंशन, यूनिट लिंक व्यवसाय, समूह बीमा व्यवसाय	
6.	पूंजी मोचन तथा निश्चित वार्षिकी व्यवसाय	9
7.	पॉलिसियों के सांविधिक विवरण	9
8.	संगठनजन्य ढांचा	9
9.	जीवन निधि, अधिशेष तथा प्रदत्त कर	9
10.	**निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व** : समूह बीमा योजनाएं एवं अन्य सामाजिक सुरक्षा, सामाजिक क्षेत्र में निवेश एवं स्वर्णजयंति फाऊंडेशन	9
11.	विपणन गतिविधियां : विभिन्न चैनलों द्वारा किया गया नव व्यवसाय, उत्पाद विकास, फील्ड कार्मिक प्रशिक्षण, बैंकेश्योरेन्स एवं वैकल्पिक चैनल्स, सूक्ष्म बीमा, स्वास्थ्य बीमा और प्रत्यक्ष विपणन	10
12.	अभिकर्ता : अभिकर्ताओं की संख्या, अभिकर्ता क्लब सदस्यता, वृत्तिक अभिकर्ताओं की योजना, मुख्य जीवन बीमा सलाहकार एवं प्राधिकृत अभिकर्ता	13
13.	**विदेश प्रचालन** : विदेशी शाखाएं, प्रतिनिधि कार्यालय, विदेशी संयुक्त उपकंपनियां	14
14.	विविध कार्यकलाप : एल.आई.सी.हाऊसिंग फाईनान्स लिमिटेड, एल.आई.सी.एच.एफ.एल. केयर होम्स लिमिटेड, एल.आई.सी.म्यूच्युअल फण्ड एसेट मैनेजमेंट कंपनी लि., एल.आई.सी.पेंशन फण्ड लिमिटेड एवं एलआईसी कार्ड सर्विसेस लिमिटेड	15
15.	ग्राहक संबंध प्रबन्धन : दावों का निबटारा, बैकलपिक जरियों से प्रीमियम भुगतान, ग्राहकों की शिकायत का निबटारा, आई.वी.आर.एस./इन्फो सेन्टर, कस्टमर जोन एवं वार्षिकी भुगतान	17
16.	निगमित संप्रेषण	19
17.	सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005	19
18.	कार्मिक/कर्मचारी संबंध कर्मचारियों की संख्या, कर्मचारी संबंध, महिलाओं का सशक्तिकरण, आरक्षण एवं राष्ट्रीय नीति कार्यान्वयन – अनुसूचित जाति/जनजातियों एवं अन्य पिछडे वर्गो के लिए आरक्षण, शारीरिक रूप से विकलांगों के लिए आरक्षण, भूतपूर्व सैनिक कर्मचारियों के लिए आरक्षण, भर्ती,कर्मचारियों को आवासीय ऋण एवं खेलकूद	20
19.	मानव संसाधन विकास/संगठन विकास पहलें/प्रशिक्षण	22
20.	प्रबंध विकास केन्द्र	22
21.	राजभाषा कार्यान्वयन	22

पृष्ठ

22. अभियांत्रिकी कार्यकलाप 23
23. संपदा/सामरिक व्यवसाय इकाई – संपदा 23
24. सूचना प्रौद्योगिकी 23
25. आंतरिक अंकेक्षण 24
26. निरीक्षण 24
27. सतर्कता 24
28. नामित निदेशक 24
29. जोखिम प्रबन्धन 25
30. कार्पोरेट अभिशासन 25
31. बोर्ड की बैठकें 25
32. केन्द्रीय प्रबंधन समिति 25
33. क्षेत्रीय सलाहकार बोर्ड 25
34. पॉलिसी धारक परिषद 25
35. जीवन बीमा निगम अधिनियम के अंतर्गत निर्देश 25
36. लेखा परीक्षक 25
37. वित्तीय वर्ष 2010–2011 के लिए योजना 26
38. आभार प्रदर्शन 26

परिणामों का सारांश 27

सारणी 31

परिशिष्ट – I 44

निगम एवं विभिन्न समितियों के सदस्य, निगम के वरिष्ठ प्रशासक एवं नियुक्त बीमांकक, क्षेत्रीय सलाहकार बोर्ड एवं बीमाधारी परिषद के सदस्यगण

परिशिष्ट – II 54

सांविधिक (केन्द्रीय) लेखा परीक्षक

लेखा :

लेखा परीक्षकों की रिपोर्ट 108

जीवन व्यवसाय :

वित्तीय विवरण (खण्डीय)

तुलन–पत्र : भारत एवं भारत के बाहर संबद्ध एवं असंबद्ध व्यवसाय से संबंधित 112

भारत राजस्व लेखा : भारत एवं भारत के बाहर संबद्ध एवं असंबद्ध व्यवसाय से संबंधित (सहभागी एवं गैरसहभागी) 114

लाभ–हानि खाता : भारत एवं भारत के बाहर संबद्ध एवं असंबद्ध व्यवसाय से संबंधित 118

अनुसूचियां जो वित्तीय विवरणों के अंगभूत हैं (अनुसूचियां 1 से 15 तक) 120

वित्तीय विवरणों का सारांश 176

अनुपात 178

प्राप्ति एवं भुगतान लेखा (नकद प्रवाह विवरण) 180

पूंजी मोचन (निर्धारित सहित) बीमा व्यवसाय :

तुलन पत्र 182

राजस्व लेखा 184

लाभ हानि लेखा 186

अनुसूचियां जो वित्तीय विवरणों के अंगभूत हैं (अनुसूचियां 1 से 4,6,8 और 11 से 13 तक) 188

INDEX

		Page
1.	**PREAMBLE**	55
2.	**MEMBERS OF THE CORPORATION, VARIOUS COMMITTEES, SENIOR EXECUTIVES AND APPOINTED ACTUARY, MEMBERS OF ZONAL ADVISORY BOARD AND POLICYHOLDERS' COUNCIL**	55
3.	**ECONOMIC SCENARIO**	55
4.	**MACRO ECONOMIC FACTORS THAT AFFECTED LIFE INSURANCE BUSINESS**	57
5.	**WORKING RESULTS**	58
	I. **New Business -** Individual Assurance, General Annuities, Pensions, Unit Linked Business, Group Insurance Business, Social Security Schemes, First Insurance, Rural Thrust	
	II. **Business in Force in Various Segments** — Individual Assurance, General Annuities, Pensions, Unit Linked Business, Group Insurance Business	
6.	**CAPITAL REDEMPTION AND ANNUITY CERTAIN BUSINESS**	59
7.	**STATUTORY STATEMENTS REGARDING POLICIES**	59
8.	**ORGANISATIONAL SET UP**	59
9.	**LIFE FUND, SURPLUS AND TAXES PAID**	59
10.	**CORPORATE SOCIAL RESPONSIBILITY** Group Schemes and Social Security, Investment in Social Sector and Golden Jubilee Foundation	59
11.	**MARKETING ACTIVITIES** New Business procured during 2009-10 Channel wise, Product Development, Field Personnel Training, Bancassurance & Alternate Channels, Micro Insurance, Health Insurance and Direct Marketing.	60
12.	**AGENTS** Agency Strength, Agent's Club Membership, Career Agents Scheme, Chief Life Insurance Advisor Scheme and Authorised Agents	63
13.	**OVERSEAS OPERATIONS –** Foreign Offices, Representative Office and Foreign Joint Venture Companies	64
14.	**DIVERSIFIED ACTIVITIES** LIC Housing Finance Ltd., LICHFL Care Homes Ltd., LIC Mutual Fund Asset Management Company Ltd., LIC Pension Fund Ltd. and LIC Cards Services Ltd.	65
15.	**CUSTOMER RELATIONSHIP MANAGEMENT** Settlement of Claims, Alternate Channels of premium payments, Policy information through SMS, Customers' Grievance Redressal, IVRS/ Info Centres, Customer Zones and Annuity Payment	67
16.	**CORPORATE COMMUNICATION**	69
17.	**RIGHT TO INFORMATION ACT, 2005**	69
18.	**PERSONNEL & EMPLOYEE RELATIONS** Staff Strength, Employee Relations, Empowerment of Women, Reservation and National Policy Implementation - Scheduled Castes, Scheduled Tribes and Other Backward Classes, Physically Challenged, Ex- Servicemen, Recruitment, Housing Loan to Employees and Sports	70
19.	**HUMAN RESOURCES DEVELOPMENT / ORGANISATIONAL DEVELOPMENT INITIATIVES / TRAINING**	72
20.	**MANAGEMENT DEVELOPMENT CENTRE**	72
21.	**OFFICIAL LANGUAGE IMPLEMENTATION**	72

		Page
22.	ENGINEERING ACTIVITIES	73
23.	STRATEGIC BUSINESS UNIT - ESTATES	73
24.	INFORMATION TECHNOLOGY	73
25.	INTERNAL AUDIT	74
26.	INSPECTION	74
27.	VIGILANCE	74
28.	NOMINEE DIRECTORS	74
29.	RISK MANAGEMENT	75
30.	CORPORATE GOVERNANCE	75
31.	BOARD MEETINGS	75
32.	CENTRAL MANAGEMENT COMMITTEE	75
33.	ZONAL ADVISORY BOARD (ZAB)	75
34.	POLICYHOLDERS' COUNCIL (PHC)	75
35.	DIRECTION AS PER LIC ACT	75
36.	AUDITORS	75
37.	BUSINESS PLANS FOR 2010-11	76
38.	ACKNOWLEDGEMENT	76
	SUMMARISED RESULTS	77
	TABLES	81
APPENDIX - I		94
	Members of the Corporation, various committees, Senior Executives and Appointed Actuary, Members of Zonal Advisory Boards and Policyholders' Council.	
APPENDIX - II		104
	Statutory (Central) Auditors	
ACCOUNTS		109
	Auditor's Report	
LIFE BUSINESS		
	Financial Statement (Segmental)	
	Balance Sheet-Non Linked and Linked in respect of Business in India and out of India	112
	India Revenue Account-Non Linked and Linked in respect of Business in India and out of India (Participating and Non Participating)	114
	Profit and Loss Account- Non Linked and Linked in respect of Business in India and out of India	118
	Schedules forming a part of the Financial Statements (Schedule 1 to 15)	120
	Summary of Financial Statements	176
	Ratios	178
	Receipt and Payment Account (Cash Flow Statement)	180
CAPITAL REDEMPTION (INCLUDING ANNUITY CERTAIN) INSURANCE BUSINESS		
	Balance Sheet	182
	Revenue Account	184
	Profit & Loss Account	186
	Schedules forming part of the Financial Statements (Schedules 1 to 4, 6, 8 & 11 to 13)	188

1. आमुख :

भारतीय जीवन बीमा निगम को 31.3.2010 को समाप्त वित्तीय वर्ष के लिए जीवन बीमा निगम अधिनियम, 1956 की धारा 27 के अन्तर्गत अपनी 53वीं वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करने में हर्ष हो रहा है ।

2. निगम एवं समितियों के सदस्य :

निगम के सदस्यों तथा वर्ष के दौरान इसकी विभिन समितियों के सदस्यों के नाम, निगम के वरिष्ठ प्रशासक, नियुक्त बीमांकक, क्षेत्रीय सलाहकार बोर्ड एवं पालिसीधारक परिषद के नाम परिशिष्ट I में हैं । (पृष्ठ सं. 44 से 53 तक)

3. आर्थिक परिवेश :

वर्ष 2008–09 के उत्तरार्ध में भारी मंदी का दौर देखने के बाद, वित्तीय वर्ष 2009–10 के पूर्वार्ध में भारतीय अर्थव्यवस्था में धीमी प्रगति बनी रही । लेकिन वर्ष 2009–10 के उत्तरार्ध में विश्वव्यापी अर्थव्यवस्था में आंशिक सुधार के चिन्ह दिखाई दिए । सरकार द्वारा वित्तीय प्रोत्साहनों का सहारा और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अनुकूल वित्तीय नीतियों के चलते घरेलू खपत में सुधार आया । इसके फलस्वरूप, वर्ष 2009–10 की अंतिम तिमाही में हुई 8.6% की अनुमानित वृद्धि के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था में पुनः उच्च वृद्धि दर लौट आया । वर्ष 2009–10 सूखाग्रस्त वर्ष होने के कारण कृषि क्षेत्र में हुई गिरावट के बावजूद कॉरपोरेट बिक्रियों में वृद्धि, धन की मांग में वापसी और निर्यात/आयात में बेहतर प्रदर्शन से यह सुधार परिदर्शित हुआ ।

क) सकल घरेलू उत्पाद :

सकल घरेलू उत्पादों की स्थिर मूल्यों पर (आधार वर्ष 1999–2000) पिछले वित्त वर्ष की तुलना में वर्ष 2009–10 में 6.7% की बजाय 7.4% की वृद्धि हुई । अक्टूबर, 2009 के बाद विनिर्माण क्षेत्र में दुहरे अंकों में सुधार आ गया ।

नई तालिका के अनुसार (आधार वर्ष 2004–05) सकल घरेलू उत्पाद में स्थिर मूल्यों पर वर्ष 2008–09 के 6.72 % की तुलना में 7.44% तक वृद्धि हुई और इसके वर्तमान मूल्यों पर 58,35,493 करोड़ रूपये होने का अनुमान था । कम बारिश होने के कारण 13 राज्यों और 300 से अधिकतम जिलों में खरीफ की फसल पर प्रभाव पड़ा और और वर्ष 2008–09 में कृषि, वन उत्पाद, मछली उत्पाद में हुई 1.58% की तुलना में 0.22% की मामूली वृद्धि हुई । इस समय चावल, मोटे अनाज और तिलहनों का उत्पादन में भारी गिरावट आई लेकिन कपास, पटसन और मेस्टा जैसे रेशेवाली फसलों के उत्पादन में बृद्धि हुई जिससे कृषि के सकल घरेलू उत्पाद में गिरावट के प्रभाव को रोकने में सहायता मिली । उद्योग क्षेत्र में विनिर्माण, खनन और उत्खनन में दुहरे अंकों की वृद्धि की सहायता से वर्ष 2008–09 में 3.87% की तुलना में 9.27% की बहुत मजबूत वृद्धि हुई थी । इस अवधि में सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर थोड़ी कम होकर 9.75% से 8.53% हो गई । इसका मुख्य कारण 'सामुदायिक सेवाओं और व्यक्तिगत सेवाओं' के वृद्धि दर में गिरावट होना था जो 13.9% से कम होकर 5.64% रह गई । वित्त, बीमा तथा अचल संपत्ति और व्यापारिक सेवाओं के वृद्धि दर में भी मामूली कमी हुई जो 10.06% से 9.70% रह गई।

ख) सकल घरेलू बचत :

वर्ष 2008–09 में वर्तमान मूल्यों पर सकल बचत अनुमानतः 18,11,585 करोड़ रूपये रही । सकल घरेलू उत्पाद की प्रतिशतता के रूप में सकल घरेलू बचत के हिस्से में लगभग 4% की गिरावट दिखाई दी जो वर्ष 2007–08 के 36.41% से घटकर 32.50% रह गई। इससे वर्ष 2002–03 से बना वृद्धि का रूख समाप्त हो गया । सकल घरेलू उत्पाद में घरेलू क्षेत्र के योगदान में कोई परिवर्तन नहीं हुआ जो 22.63% रहा । जबकि यह वर्ष 2007–08 में 22.64% था । सकल घरेलू उत्पाद में निजी कारपोरेट क्षेत्र के हिस्से में मामूली गिरावट आई जो 8.72% से घटकर 8.44% रही । तथापि, यह गिरावट सरकारी क्षेत्र के मामले में उल्लेखनीय रही जो सकल घरेलू उत्पाद के 5.05% से घटकर 1.44% रह गयी । वर्तमान मूल्यों पर घरेलू क्षेत्र का योगदान वर्ष 2007–08 में 11,20,221 करोड़ रूपये से बढ़कर वर्ष 2008–09 में 12,61,332 करोड़ रूपये हो गया । इसके फलस्वरूप, सकल घरेलू बचत में घरेलू क्षेत्र का हिस्सा 62.18% से बढ़कर 69.63% हो गया । सकल घरेलू बचत में सकल वित्तीय बचत 40.29% से बढ़कर 41.24% हो गई और भौतिक संपत्तियों में बचत 31.50% से बढ़कर 37.53% हो गई ।

सकल घरेलू निवेश दर वर्ष 2008–09 में सकल घरेलू उत्पाद के 34.9% की तुलना में वर्ष 2009–10 में सकल घरेलू उत्पाद के 35.0% पर स्थिर रही । घरेलू क्षेत्र सकल वित्तीय बचत जो वर्ष 2007–08 में 7,25,841 करोड़ रूपये थी वह 2008–09 में बढ़कर 7,47,130 करोड़ रूपये हो गई, जिसमें वर्तमान मूल्यों पर 2.93% की सामान्य वृद्धि दिखाई दी । घरेलू क्षेत्र की निवल वित्तीय बचत वर्तमान मूल्यों पर वर्ष 2007–08 में 5,52,725 करोड़ रूपये थी वह 5.19% से बढ़कर वर्ष 2008–09 में 5,81,428 करोड़ रूपये हो गई। सकल वित्तीय बचत में घरेलू क्षेत्र के हिस्से में मामूली वृद्धि हुई जो 76.15% से बढ़कर 77.82% हो गई । यद्यपि शेयरों और डिबेंचरों के बचत में तीव्र गिरावट आई जो वर्ष 2007–08 में सकल वित्तीय बचत के 12.61% से घटकर वर्ष 2008–09 में मात्र 2.64% रह गई तथापि बीमा निधियों और नकदी में मामूली बढ़ोतरी दिखाई दी । सकल वित्तीय बचत में जमा राशियों के हिस्से में वृध्दि हुई, जो वर्ष 2007–08 में 51.54% थी और वर्ष 2008–09 में वह बढ़कर 58.45% हो गयी । सकल वित्तीय बचत की प्रतिशतता के रूप में घरेलू क्षेत्र की वित्तीय देयताएं 23.85% से घटकर 22.18% रह गई।

ग) वित्तीय स्थिति :

सरकार ने करों को कम करने तथा लक्षित क्षेत्रों में व्यय करने के रूप में विस्तारात्मक वित्तीय नीति को जारी रखा ताकि आर्थिक विकास में लगातार वृद्धि बनाई रखी जा सके । करों को कम करने तथा अर्थव्यवस्था में कम वृद्धि के परिणामस्वरूप राजस्व आय पर प्रभाव पड़ा । कर राजस्व (निवल) गिरकर 4,74,218 करोड़ रूपये रह गया जो वर्ष 2008–09 में सकल घरेलू उत्पाद के 8.76% से घटकर 2009–10 में 8.10% रह गया । सकल वित्तीय घाटा 4,00,996 करोड़ रूपये (सकल घरेलू उत्पाद के 6.85%) रहने का अनुमान है जबकि राजस्व घाटा 2,82,735 करोड़ रूपये (सकल घरेलू उत्पाद के 4.83%) रहने का अनुमान है ।

सरकार ने वर्ष 2010–11 के बजट में तेरहवें वित्त आयोग की सिफारिशों के अनुसार वित्तीय प्रोत्साहनों को उत्तरोत्तर हटाने का संकेत दिया है । सरकार ने पहली बार, सार्वजनिक ऋण –सकल घरेलू उत्पाद अनुपात में कमी का लक्ष्य साधा है । सरकार ने प्रत्यक्ष कर संहिता को लागू करने की अपने मंशा की भी घोषणा की है और उसका प्रयास होगा कि कर सुधार प्रक्रिया के कड़ी के रूप में 1 अप्रैल, 2011 में सामान तथा सेवा कर आरंभ हो जाए । वित्त वर्ष 2010–11 के लिये वित्तीय घाटे को 5.5% पर रखने का लक्ष्य रखा गया है जबकि राजस्व घाटे को 4.0% पर रखने का लक्ष्य है । सकल वित्तीय घाटे और राजस्व घाटे को वर्ष 2012–13 तक सकल घरेलू उत्पाद के 4.1% तथा 2.7% के स्तरों तक घटाने का लक्ष्य रखा गया है ।

घ) मुद्रा स्थिति :

वर्ष 2009–10 के पूर्वार्ध में आर्थिक कार्यकलापों में मंदी जारी रहने के कारण तथा मुद्रास्फीति के निम्न स्तरों पर रहने के आधार भारतीय रिजर्व बैंक ने आरंभ में आर्थिक संकट के बुरे परिणामों का सामना करने और अंततः सुधार कायम रखने के लिए अनुकूल मुद्रा नीति जारी रखी । अक्टूबर, 2008 से अप्रैल, 2009 तक रेपो रेट को 425 बेसिस प्वाइंट घटाकर 4.75% तक, रिवर्स रेपो रेट को 275 बेसिस प्वाइंट से घटाकर 3.25% तक तथा सीआरआर को 400 बेसिस प्वाइंट घटाकर 5% तक लाया गया जिसमें अप्रैल, 2009 के महीने में रेपो तथा रिवर्स रेट दोनों में 25 बेसिस प्वाइंट को घटाना शामिल है । वर्ष 2009 के उत्तरार्ध में, विशेष रूप से वित्त वर्ष की अंतिम तिमाही में अर्थव्यवस्था में वृद्धि कायम रखने के संकेत दिखाई दिये । इसी समय मुद्रास्फीति में वृध्दि व्यापक होनी शुरू हो गई । भारतीय रिजर्व बैंक ने मुद्रा संबंधी प्रतिक्रिया में लगभग सभी गैर–परंपरागत मुद्रा संबंधी उपायों को समाप्त करके मुद्रा संबंधी प्रोत्साहनों को धीरे–धीरे वापस करने की प्रक्रिया आरंभ की । फरवरी 2010 से जुलाई 2010 की अवधि के दौरान रेपो रेट में 125 बेसिस प्वाइंट, रिवर्स रेपो रेट में 100 बेसिस प्वाइंट तथा सीआरआर में 100 बेसिस प्वाइंट तक वृद्धि की गई थी । सांविधिक चलनिधि अनुपात को भी एनडीटीएल (निवल मांग तथा मीयादी देयताओं) के 25% तक वापस किया गया, जैसी कि मंदी के आरंभ होने के समय कायम था । इस प्रकार, यहां वर्ष 2009–10 के पूर्वार्ध के वृद्धि संबंधी प्रोत्साहनों में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मुद्रा नीति में सुस्पष्ट परिवर्तन किया गया ताकि उत्तरार्ध में आर्थिक सुधारों को हानि पहुंचाए बिना मुद्रास्फीति को रोका जा सके ।

ड) मुद्रास्फीति :

अक्तूबर, 2009 तक मुद्रास्फीति दर्शानेवाले थोक मूल्य सूचकांक में वृद्धि वर्ष दर वर्ष आधार पर बहुत सामान्य थी । वास्तव में, थोक मूल्य सूचकांक में जून से अगस्त की अवधि के दौरान गिरावट आयी । इसका मुख्य कारण वित्त वर्ष 2008–09 के पूर्वार्ध में उच्च मुद्रास्फीति का प्रभाव था । यद्यपि प्रारंभिक वस्तुओं की मुद्रास्फीति पूरे वित्तीय वर्ष के दौरान ऊंची थी, परन्तु इसके प्रभाव को अन्य वस्तुओं में निम्न स्तर की मुद्रास्फीति द्वारा सामान्य कर दिया था । तथापि, नवम्बर, 2009 के बाद मुद्रास्फीति में तीव्र वृद्धि हुई जो वित्तीय वर्ष के अंत तक 11% से ऊपर के स्तरों तक पहुंच गई, क्योंकि अन्य दो वर्गो जैसे विनिर्मित उत्पादों और इंधन, बिजली, प्रकाश आदि में भी तीव्र मुद्रास्फीति आ गयी ।

औद्योगिक रोजगार से संबंधित उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई–आईडब्ल्यू) पूरे वर्ष के दौरान 7.5% से ऊपर बना रहा । औद्योगिक कामगारों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक प्वाइंट टू प्वाइंट मुद्रास्फीति दर मार्च, 2010 में 14.9% थी, कृषि मजदूरों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में यह 15.8% थी, ग्रामीण मजदूरों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में यह 15.52% थी और शहरी गैर–शारीरिक श्रमवाले कर्मचारियों के उपभोक्ता मूल्य सूचकांक में यह 14.9% थी ।

च) शेयर तथा ऋण इक्विटी तथा डेट बाजार :

पूरे वर्ष के दौरान अधिक नकदी बनी रही जिसके कारण मुद्रा बाजार में ब्याज दरें निचले स्तर पर रहीं । मुद्रा बाजार में दैनिक आदान–प्रदान में 49% की वृद्धि से बाजार की स्थितियों में सुधार का संकेत मिला । सरकार द्वारा बाजार से अधिक उधार लिए जाने की वजह से सरकारी प्रतिभूतियों की प्रतिलाभों में ऊर्ध्वमुखी दबाव दिखाई दिया । तथापि, निजी क्षेत्र से ऋण की कम मांग और साथ ही भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा चलनिधि में बढ़ोतरी किए जाने से बढ़ती हुई प्रतिलाभों को रोकने में सहायता मिली । दस वर्षीय बॉण्डों का प्रतिलाभ जो वर्ष 2008–09 के अंत में 7.01% था, वित्तीय वर्ष 2009–10 के अंत तक बढ़कर 7.83% हो गया । चलनिधि में बढ़ोतरी की स्थिति ने जमा प्रमाणपत्रों (सीडी) और वाणिज्यिक दस्तावेजों (सीपी) के निर्गम में भी वृद्धि दर्ज कर दी । यद्यपि अंतिम तिमाही की आंशिक वृद्धि को छोड़कर सीडीज के लिए ब्याज दरें अधिकांशतः स्थिर रहीं, सीपी पर ब्याज दरें मिलीजुली रहीं । जैसे ही घरेलू खपत में वृद्धि होने तथा विश्वव्यापी आर्थिक परिस्थितियों में सुधार होने से पूंजीगत अंतर्वाह पुनः आरंभ हुआ, इक्विटी बाजार में कारोबार पुनः लौटा और पूरे वित्त वर्ष के दौरान सुधार कायम रहा । मुंबई शेयर बाजार सूचकांक बीएसई सेन्सेक्स में 80% की वृद्धि हुई जबकि सीएनएक्स निफ्टी में लगभग 74% की बढ़त हुई । सूचकांकों में वृद्धि के साथ कारोबार में भी मजबूत